



हारमोनियम वाद्य की गुणवत्ता में 'रीड' का योगदान



रोहित कुमार

संगीत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सार-संक्षेप

भारत में सुषिर वाद्यों की श्रेणी में यदि सर्वाधिक प्रचलित वाद्य का वर्णन किया जाए तो वह हारमोनियम वाद्य है। वर्तमान में हारमोनियम वाद्य लोक संगीत से लेकर शास्त्रीय संगीत में मजबूत पकड़ बनाए हुए हैं। हारमोनियम वाद्य का लोकप्रिय होने का कारण इसकी अखण्ड तथा अधिक समय तक बजने वाली ध्वनि है। इस विशेषता के कारण हारमोनियम वाद्य प्रत्येक प्रकार के संगीत कार्यक्रम में देखने व सुनने को प्राप्त होता है। हारमोनियम वाद्य की इस अखण्ड और मधुर ध्वनि के लिए उच्च गुणवत्ता वाली रीड का महत्वपूर्ण कार्य होता है। हारमोनियम वाद्य में रीड को अलग-अलग प्रकार से लगाया जाता है, जिस पर हारमोनियम की ध्वनि निर्भर करती है। इसी परिपेक्ष में प्रस्तुत शोध-पत्र में हारमोनियम में लगने वाली रीड्स का वर्णन किया गया है। गायन तथा वादन के लिए किस प्रकार की ट्यूनिंग द्वारा रीड्स को तैयार किया जाना चाहिए इसका विवेचन किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र द्वारा संगीत विद्यार्थियों को रीड के महत्व की जानकारी उपलब्ध करने का प्रयास किया गया है। रीड की गुणवत्ता को बढ़ाने के कारकों को प्रकाशित करने का प्रयास किया है। शोध पत्र को लिखने के लिए वर्णनात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया है।

मुख्य शब्द : हारमोनियम, रीड, ट्यूनिंग, पीतल धातु, प्रसिद्ध रीड्स, संगीत विद्यार्थी, आर्गन।

शोध-पत्र

स्वर पटल (Keyboard) वाद्यों के सुषिर वर्ग में आर्गन वाद्य को अति महत्वपूर्ण वाद्य माना जाता था। आर्गन का प्रयोग ईसाई घरों में सामूहिक गान करते समय किया जाता था। आर्गन के निर्माण में बड़े-बड़े पाईप्स का प्रयोग किया जाता था इसलिए इसका आकार बहुत ही विशाल होता था। आर्गन में हवा के दबाव को एक धौंकनी द्वारा नियंत्रित कर पाईप्स से हवा निकाली जाती थी, जिससे ध्वनि उत्पन्न होती थी। आर्गन पाईप्स से यह हवा निकालने के लिए स्वरपटल की कुंजी को अंदर-बाहर खींचने की व्यवस्था थी। “न टूटने वाली ध्वनि और अधिक समय तक अखण्ड रहने वाले सुर आर्गन वाद्य की विशेषता बन गए थे। समय और तकनीकी परिवर्तन के अनुसार 19वीं शताब्दी में पाईप्स आर्गन की जगह आर्गन रीड्स ने ले ली।” (भालोदकर 15)

रीड

हवा के दबाव से जब रीड में लगी पत्ती अर्थात् रीड की जिह्वा कंपित होती है तो रीड से ध्वनि अर्थात् सुर उत्पन्न होते हैं। जैसे-जैसे रीड का आकार छोटा बनाया जाता है तो उसकी ध्वनि भी ऊँची और तीखी होती जाती है।

“सर्वप्रथम चीन के राजा न्यूकवा द्वारा एक पंछी फेनिक्स के शरीर की

संरचना और आवाज के आधार पर शेंग वाद्य बनाया गया था। शेंग वाद्य प्रथम स्वतंत्र रीड आधारित वाद्य था। क्रिश्चनिक गोंटलिब नामक फिजियोलॉजी के प्रोफेसर ने शेंग वाद्य की रीड का गहनता से अध्ययन करके पहली बार विश्व को ‘स्वतंत्र रीड’ से परिचित करवाया था। इसके पश्चात् आर्गन वाद्य निर्माता क्रिसयनिक को ‘स्वतंत्र रीड’ का प्रयोग आर्गन में करने का सुझाव दिया। ‘स्वतंत्र रीड’ वाला पहला आर्गन प्रसिद्ध ‘एबे जार्ज जोसेफ वोगलर’ द्वारा बनाया गया था।” (Sachs 184)

इस प्रकार स्वतंत्र रीड को आधार बनाकर बहुत से रीड युक्त वाद्यों का निर्माण किया गया जैसे कि माउथआर्गन, अकोरडियन, हारमोनियम आदि।

हारमोनियम वाद्य

हारमोनियम वाद्य सुषिर वाद्यों की श्रेणी में आता है। धौंकनी द्वारा हवा का दबाव बनाकर हवा को रीड्स के मध्य से निकाला जाता है, जिससे रीड की पत्ती अर्थात् रीड की जिह्वा कंपन द्वारा सुर उत्पन्न करती है। “हारमोनियम वाद्य के निर्माण में अनेक विद्वानों ने प्रयास किया और इन विद्वानों में से एलेक्सजेंडर डिबैन ने हारमोनियम वाद्य का आविष्कार सन् 1840 ई. में अपने नाम पर पेटेंट (अधिकार) करवा लिया था।

पाश्चात्य संगीत का आधार कोर्ड और हार्मनी होने के कारण हार्मनी शब्द पर हारमोनियम नाम रखा गया।' (भालोदकर 17)



चित्र 1: एलेक्सजेंडर हारमोनियम (रॉयल कलेक्शन ट्रस्ट, यूके)
हारमोनियम वाद्य में प्रयोग होने वाली रीड्स का वर्णन-

“सर्वप्रथम रीड के बारे में यह जानकारी होनी आवश्यक है कि रीड कितने प्रकार की होती है। रीड के प्रकारों का वर्णन इस प्रकार से है-

1. मेल रीड
मेल रीड को मध्यसप्तक और Standard Reed के नाम से भी जाना जाता है।
2. बास मेल
बास मेल रीड को खरज के स्वर अर्थात् स्वरों को भारी करने के लिए लगाते हैं। यह मेल रीड से 12 स्वर नीचे होती है।
3. फिमेल रीड
फिमेल रीड को मदीन रीड भी कहा जाता है। यह मेल रीड से 12 स्वर ऊपर होती है। फिमेल रीड की ध्वनि तीखी और ऊँची होती है।

साधारणतया हारमोनियम में मेल-फिमेल दोनों रीड्स का प्रयोग 2 पंक्तियों में किया जाता है।' (सुखविंदर सिंह खालसा)

रीड बनाने की प्रक्रिया का वर्णन

- सर्वप्रथम पीतल की तार को रूले में डालकर चपटा किया जाता है।



चित्र 2: रीड का ढाँचा (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)

- आकार के अनुसार चपटा किए हुए पत्ते की कटिंग की जाती है। इस पत्ते को रीड की जिह्वा बोलते हैं।
- रीड के बाहरी ढाँचे की धातु की ढलाई (आकृति देना) आकार अनुसार की जाती है।
- रीड के ढाँचे को आकार अनुसार व्यवस्थित करना।



चित्र 3: साईज सेटिंग (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)

- रीड की जीब को रीड के ढाँचे के साथ ठोंककर रिबट से मजबूत जोड़ा जाता है। एक तरफ से पत्ता (जीब) रीड के ढाँचे से जुड़ी रहती है और एक तरफ से स्वतंत्र रहती है।



चित्र 4: रीबट + हथौड़ी (स्वयं द्वारा लिया गया चित्र)

- इसके पश्चात् इस बनाई हुई रीड की अच्छे से सफाई की जाती है।
- अंतिम चरण में रीड को स्वर अनुसार ट्यून किया जाता है।



चित्र 5: रीड की सफाई (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)



चित्र 6: रीड ट्यून करते हुए (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)



चित्र 7: तैयार रीड का चित्र (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)

जर्मन रीड्स के सफल होने का कारण पीतल धातु की उच्च गुणवत्ता होती थी। भारत में अब अधिक मुनाफा कमाने के लिए पुराने कपड़ों से धातु के बटन उतारकर रीड की धातु की ढलाई में घोल दिया जाता है, जिससे ध्वनि की गुणवत्ता भी कम हो जाती है। (सुखविंदर सिंह खालसा)

रीड्स की ट्यूनिंग का वर्णन

1. जर्नल ट्यूनिंग

पहले एक ही तरह की ट्यूनिंग होती थी जिसे जर्नल ट्यूनिंग कहते थे। रीड्स की जर्नल ट्यूनिंग में हारमोनियम प्रत्येक स्वर से सुर में बजाया जाता है, लेकिन शास्त्रीय संगीत में यह बेसुरा माना जाता है। (शर्मा)

2. स्वर विशेष ट्यूनिंग

“ऐसी ट्यूनिंग में रीड को एक विशेष स्वर के अनुसार ही ट्यून किया जाता है। ऐसा हारमोनियम उस विशेष स्वर से बजाने पर ही सुर में बजेगा अर्थात् पहले काले का हारमोनियम सिर्फ वहीं से सुर में बजेगा अन्य स्वर से बेसुरा बजेगा। इस प्रकार की ट्यूनिंग का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में किया जाने लगा है। हारमोनियम वादक गायक/गायिका के स्वर अनुसार अलग-अलग स्वर से ट्यून हारमोनियम रखते हैं। ऐसे हारमोनियम तानपुरे के साथ शत-प्रतिशत सुर में गायक अनुसार बजाए जाते हैं।” (शर्मा)

3. गोल ट्यूनिंग

“दो या दो से अधिक रीड जब एक स्वर पर लगाई जाती है तो उन सभी के बीच में श्रुति अंतराल बहुत ही कम होना चाहिए अर्थात् सभी रीड ऐसी ध्वनि उत्पन्न करें जैसे कि लगे एक ही रीड बज रही हो। यह ट्यूनिंग वाले हारमोनियम अधिक सुरीले और मीठी ध्वनि वाले होते हैं। शास्त्रीय संगीत में इनका ही प्रयोग करते हैं।” (सिंह)

ईक्वल टेम्पर्ड स्केल-ट्यूनिंग

इस ट्यूनिंग में पाँचवे स्वर को आधार बनाकर ट्यूनिंग करते हैं या फिर चौथे स्वर को आधार बना कर करते हैं। अर्थात् पाँचवे स्वर (5th Note) से तात्पर्य स-प संवाद से है और चौथा स्वर से तात्पर्य स-म संवाद से है।

पाँचवें स्वर से ट्यूनिंग

स से प को पाँचवां स्वर माना जाता है। प स्वर को स मान कर जब स-प संवाद करेंगे तो जो पाँचवाँ स्वर आएगा वह शुद्ध रे स्वर आएगा। इसी प्रकार से शुद्ध रे स्वर से स-प संवाद द्वारा शुद्ध ध स्वर प्राप्त किया जाएगा।

- शुद्ध ध स्वर से स-प संवाद करने पर शुद्ध ग स्वर आएगा।
- शुद्ध ग को स मान कर स-प संवाद करने से शुद्ध नि स्वर प्राप्त होगा।
- शुद्ध नि स्वर को स मान कर स-प संवाद करने से तीव्र म स्वर प्राप्त होगा।
- तीव्र म को स स्वर मानकर स-प संवाद करने से कोमल रे स्वर प्राप्त होगा।
- कोमल रे को स स्वर मानकर स-प संवाद करने से कोमल ध्र स्वर प्राप्त होगा।
- कोमल ध्र स्वर को स स्वर मानकर स-प संवाद से कोमल गु स्वर प्राप्त होगा।
- कोमल गु स्वर से स-प संवाद करने पर कोमल नि स्वर प्राप्त होगा।
- कोमल नि स्वर को स स्वर मानकर स-प संवाद करने से शुद्ध म प्राप्त होगा।
- शुद्ध म स्वर को स स्वर मानकर स-प संवाद करने से जो स्वर प्राप्त होगा वह तार सप्तक का सां है, परंतु तार सप्तक का सां स्वर बेसुरा होगा।

स-प संवाद ट्यूनिंग में जो अंतिम स्वर प्राप्त हुआ वह तार सप्तक का सं है परन्तु वह स्वर बेसुरा होता है। तार सां के बेसुरे-पन को दूर करने के लिए जो फाईन ट्यूनिंग करनी पड़ेगी तथा इस फाईन ट्यूनिंग को करते समय जितना अंतर आएगा वह सभी स्वरों में एक समान रूप से विभाजित किया जाता है। (मिश्र)

उच्च गुणवत्ता वाली रीड्स की विशेषता

हारमोनियम में प्रयुक्त रीड की उच्च गुणवत्ता की कई विशेषताएँ हैं:-

1. यह रीड्स अधिक समय तक ट्यून रहती है तथा बार-बार बेसुरी नहीं होती है।
2. घोंकनी द्वारा कम हवा देने पर भी अधिक समय तक बजती है क्योंकि रीड के ढाँचे तथा जीब में उचित अंतराल होता है।
3. कम हवा या तेज हवा देने पर भी स्वर बेसुरा नहीं होता है। (सिंह)



चित्र 8: दलजीत सिंह जी (पगड़ी में)

रीड की उच्च गुणवत्ता होने के कारक

1. उच्च गुणवत्ता का पीतल धातु प्रयोग करने से रीड अच्छी बनती है।
2. रीड के ढाँचे और जिक्हा के बीच अंतराल अधिक नहीं होना चाहिए।
3. रीड की पीतल धातु में तांबा धातु मिश्रण करने से रीड की ध्वनि शार्प होती है जो कि हारमोनियम पीस बजाने के लिए उचित होती है।

दोष युक्त रीड की पहचान

1. रीड की बाड़ी और रीड की जिक्हा में अधिक अंतराल होना।
2. रीड का बार-बार बेसुरा अर्थात् डि-ट्यून हो जाना।
3. रीड की जिक्हा का बार-बार ढीला होना अर्थात् रीबट सही तरीके से ना जुड़ना। (खालसा)



चित्र 9: सुखविंदर सिंह खालसा (शोधार्थी द्वारा लिया गया चित्र)

प्रसिद्ध रीड्स के नाम

जर्मनी के रीड्स—हरमोला, मरोच, जुबिलेट, मोनार्क।
पालिटाना रीड्स—मोहनलाल मिस्त्री, सम्राट, धीरजलाल, कांजीलाल मिस्त्री,
पेरिस रीड्स—कैसरीयल और स्टीव ब्रांड
पानीपत के N.S रीड्स और V.S रीड्स (मिश्र 33)

प्रसिद्ध रीड्स की दुकान/निर्माता

पालिटाना रीड्स—रतिलाल जीवन लाल मिस्त्री, लाटी बाजार, भैरव पारा, पालिटाना, भावनगर, गुजरात, भारत - 364270 फोन नं. +91-9428183510 ईमेल - nsreeds2001@yahoo.com

एन.एस. रीड्स - एन.एस. म्यूजिकल इंटरप्राइज, बरसत रोड़, पानीपत, हरियाणा, भारत - 132103, फोन नं. +91-9416281935 ईमेल - nsreeds2001@yahoo.com

नवजीवन हरमोनियम रीड्स मैनुफैक्चरर कम्पनी - भैरव पारा, नजदीक खाक चौक मंदिर, पालिटाना, गुजरात, भारत - 364270, फोन नं. 02848-251518

खालसा रीड्स - खालसा म्यूजिक हाउस, दुकान नं. 1, बस स्टैंड के विपरित, जम्मू-दिल्ली रोड़, बिशन स्वरूप कालोनी, पानीपत, हरियाणा - 132103, फोन नं. 9034004888

निष्कर्ष

आवश्यकता को आविष्कार की जननी कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। रीड से पहले बड़े पाईप्स का प्रयोग करने से वाद्य का आकार बड़ा होता था, जिससे वाद्य आवागमन करने में कठिनाई होती थी। रीड्स का आविष्कार होने से यह कठिनाई दूर हो गई और वाद्य के साथ आवागमन करना सरल हो गया। हारमोनियम वाद्य में रीड्स का महत्वपूर्ण कार्य है। इसलिए सभी को रीड्स के बारे में उचित जानकारी इस शोध पत्र से प्राप्त होगी। संगीत विद्यार्थियों को सदैव उच्च गुणवत्ता वाली रीड्स के हारमोनियम ही खरीदने चाहिए। हारमोनियम को बजाकर यह ज्ञात किया जा सकता है कि स्वर कितनी देर तक बज रहा है या एक दम से बंद तो नहीं हो रहा है। इसमें हमें हारमोनियम में लगी रीड्स की गुणवत्ता और हवा के भराव का अनुमान लग जाता है।

संदर्भ सूची

1. भालोदकर, जयंत, संवादिनी (हारमोनियम), कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, 4697/5-21ए, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, 2006
2. Sachs, Curt, The History of Musical Instruments, W.W. Norton and Company, Inc. Publishers, New york.
3. Opicit, भालोदकर, जयंत
4. साक्षात्कार: खालसा, सुखविंदर सिंह, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 3 फरवरी, 2024
5. साक्षात्कार: खालसा, सुखविंदर सिंह, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 3 फरवरी, 2024
6. साक्षात्कार: शर्मा, दिनकर, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 8 मार्च, 2024
7. साक्षात्कार: सिंह, दलजीत, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 25 नवंबर 2023
8. साक्षात्कार: सिंह, दलजीत, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 25 नवंबर 2023
9. साक्षात्कार: खालसा, सुखविंदर सिंह, साक्षात्कारकर्ता: रोहित कुमार, 3 फरवरी, 2024
10. मिश्र, डॉ. विनय कुमार, हारमोनियम विविध आयाम, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, 4649-बी/21, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण, 2015